AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

vijkèkk dh fujUrj c<rh gÃ l[;k ,d fpUruh; leL;k& èkerjh ftys dk fo'ks"k lnHkZ esa ,d vè;;u

ORIGINAL ARTICLE

Author
ihdt tSu
सहायक प्राध्यापक, विधि विभाग
बी.सी. एस. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
धमतरी, छत्तीसगढ़, भारत

'kks/k lkj

orZeku ifjis{; esa c<rh gÃ vijkèk dh la[;k fuf'pr :i ls ,d xEHkhj leL;k dk :i esa gekjs lkeus gS] vr% mä 'kkèk vè;;u esa iwoZ ds dqN 'kkèkk dk vè;;u dj vijkèkk esa deh ykus gsrq dqN egRoiw.kZ lq>ko çLrqr fd, x, gSA vijkèk ,d voèkkfud dk;Z gS tks fd nMuh; gS ,oa {kE; ugh gSA orZeku ifjis{; esa pksjh] cyokr] nxk] cykRdkj] ngst] vigj.k] ekjihV] èkks[kkèkM+h tSls fofHkUu vijkèkks dk lkFk&lkFk lkbcj vijkèk Hkh ,d xEHkhj leL;k ds :i esa gekjs lkeus gSA fuèkurk] cjkstxkjh] vf'k{kk] dkuwu 0;oLFkk esa ypheykiu] vknru vijkèkh tSls dkj.k vijkèk gsrq mÙkjnk;h gS ftuds mik; gsrq yhxy dSEi] ykxks esa tkx:drk] f'k{kk dh mPp Lrj tSls fofHkUu mik; fd, tk jgs gSA ckotwn vijkèk de gksus dk ctk; fujUrj c<rs tk jgs gSA vr% dkuwu ,oa ljdkjh ç;kl rHkh lQy gks ldrs gS tc ykx Lo;a vijkèk ds ifj.kkeks dk le>dj vijkèk djus ls cpsA

eq[; 'kCn

vijk/k] cjkstxkjh] ngst iFkkA

çLrkouk

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण अपनी अनंत आवश्यकता की पूर्ति किसी भी साधन से करना चाहता है और इन्ही आवश्यकताओं की पूर्ति जब वह नही कर पाता तो यही स्थिति अपराध को जन्म देती है। वह अपनी इच्छा, आवश्यकता, जरूरत को पूर्ण करने हेतु अवैधानिक तरीकों एवं अवैधानिक साधनों का प्रयोग करता है जिसे अपराध कहा जाता है। निश्चित रूप से अपराध को हम एक आवश्यक बुराई या रोग कह सकते है जो पूरे समाज को प्रभावित करता है जिसके कारण अपराधी को दण्ड दिया जाता है और ऐसा कार्य क्षम्य नही होता। अपराध के अंतर्गत आने वाले सभी कार्य अवैधानिक होते है जिनसे जनसामान्य को क्षति होती है। वर्तमान परिपेक्ष्य में विभिन्न प्रकार के बढ़ते हुए अपराधो की संख्या निश्चित रूप से चिन्तनीय समस्या है जिसमें कमी लाना एक बहुत बड़ी चुनौती है।

'kkèk midYiuk,a

उक्त विषय पर अध्ययन के पूर्व कुछ उपकल्पनाएं थीः

1. अपराध करने के पीछे वास्तविक कारण क्या है?
2. अपराध के निरन्तर बढ़ने के पीछे क्या कारण है?
3. अपराधों की संख्या में कमी लाने हेतु पुलिस की भूमिका क्या है?
4. अपराधों को रोकने में दंड की क्या भुमिका है?
5. अपराध करने के पीछे अपराधी की मनः स्थिति क्या रहती है?

'kkèk mís';

उक्त विषय पर अध्ययन करने के उद्देश्य इस प्रकार हैः

1. अपराधो की निरंतर बढ़ती हुई संख्या को रोकने हेतु पुलिस की भूमिका पर अध्ययन।
2. अपराध करने के पीछे अपराधी की मनः स्थिति एवं वास्तविक कारण का अध्ययन।
3. अपराधो मे कमी लाने हेतु दंड़ की प्रासंगिकता तय करने।
4. अपराध की भयावह स्थिति को जनसामान्य को समझाने हेतु ।
5. अपराध के बाद अपराधी के परिवार की स्थिति एवं मनोदशा के माध्यम से अपराध की भयावकता एवं परिणाम को जनसामान्य को समझाने के उद्देश्य से।

'kkèk dk Çlgkoykdu

उक्त विषय पर पूर्व मे किए गए कुछ शोधो का अध्ययन करने के पश्चात् कुछ नए बिन्दु पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

'kkèk çfofèk

उक्त अध्ययन मे द्वितीयक आंकड़ों को प्रस्तुत किया है द्वितीयक आंकड़ो में समाचार पत्र, जर्नल्स, इन्टरनेट सामाग्री, पुस्तकों, विधि पत्रिका आदि का प्रयोग किया गया है।

vijkèk dk vFkZ% साधारणतया अपराध से तात्पर्य उन कार्यो से होता है जिनके करने अथवा जिनके लोप करने से पूरे समाज को हानि होती है एवं वह कार्य देश के कानून में दण्डनीय हो। इस प्रकार अपराध में वे सभी कार्य आते है जो भारतीय दण्ड संहिता में दंडनीय हो।

Cyid LVku d vuqlkj% ''ऐसा कोई कार्य करना अथवा करने से विरत रहना जिससे सामान्य विधि के किसी नियम का अतिक्रमण होता हो, अपराध कहलाता है।''

duh d vuqlkj% ''अपराध उन अवैधानिक कार्यो को कहते है जिनके बदले में दण्ड दिया जाता है और वह क्षम्य नही होते,यदि क्षम्य होते भी है, तो राज्य के अतिरिक्त उन्हें अन्य किसी भी व्यक्ति को क्षमा प्रदान करने का अधिकार नही होता है।

उक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि अपराध के अंतर्गत आने वाले सभी कार्य अवैधानिक होते है जिनसे सामान्यजन को क्षति कारित होती है और बदले में अपराधियों को दण्ड दिया जाता है।

èkerjh ftys esa foxr pkj o"kksZ esa fofHkUu vijkèkksa ds vkadM+s

छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के सन् 2019 से 2022 तक विभिन्न अपराध के आंकड़े इस प्रकार हैः

अपराध	2019	2020	2021	2022
हत्या	22	18	16	26
चोरी	96	148	174	217
अपहरण	41	44	49	50
दुष्कर्म	75	85	76	47
धोखाधड़ी	34	35	24	26
दहेज मृत्यु	04	02	03	06
बलवा	13	28	24	36

(स्त्रोतः दैनिक भास्कर, धमतरी, 31 दिसंबर 2022, पेज नंबर 15)

छ.ग. के धमतरी जिले में यदि पिछले चार वर्षो का अध्ययन करे तो स्पष्ट है कि हर वर्ष अपराधों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। हत्या, अपहरण, चोरी, बलबा जैसे अपराधों की संख्या ग्राफ जिले में निरन्तर बढ़ा है। सन् 2021 में कुल केस 1893 थे जबकि 2022 मे कुल 2045 अपराध दर्ज हुए है यानी साल भर में 6.47 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई है। सड़क हादसों में 151 लोगो की मौत हुई, इसमें यद्यपि पिछले साल की तुलना में 9.03 प्रतिशत की कमी आई है। धमतरी जिले मे 2021 में 331 दुर्घटना में 166 मृत हुए थे एवं 317 घायल हुए थे, जबकि 2022 में 336 लोग घायल हुए। 2022 में धमतरी जिले में ट्रैफिक व्यवस्था सुधारने में पुलिस में 11438 वाहनों को पकड़ा जबकि 2021 में 12231 केस बना। यदि जिले में 05 साल का रिकार्ड देखे तो 1580 सड़क दुर्घटना में 1536 लोग घायल हुए जबकि 695 लोगों की मृत्यु भी हुई।

eukgjyky cuke foujs'k vkuan 1– इस मामले मे सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ''अपराधी को अभियोजित एवं दंडित किया जाना एक सामाजिक आवाश्यकता है यह समाज के हित मे नही है कि कोई अपराधी अपने दायित्व से बच निकले। 1. LVsV v,Q egkjk"V cuke ,e-,p- tktZ – इस मामले मे सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ''यद्यपि अघतन संविधान संविधियों का अपराध स्थल पर पहुंच पाना अत्यन्त कठिन है अर्थात् उसी संविधि के बनते ही प्रत्येक व्यक्ति को उसका तत्काल ज्ञान हो जाना असंभव है फिर भी कोई भी व्यक्ति इस के अज्ञानता के कारण दंड से बच नही सकता।''

vkj cuke fyojsV 2% इस मामले मे सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि दुराश्य अपराध का एक आवाश्यक संघटक है।

vkj cuke vkyMs 3% न्यायालय ने निर्णय दिया कि कोई भी व्यक्ति तब तक दोषी नही है जब तक उसकी मन भी दोषी ना हो।

vHk;kuan cuke LVsV4% न्यायालय ने कहा कि तैयारी पूर्ण होने के बाद प्रयत्न आरंभ होता है और किसी कृत्य का किया जाना अपराध के लिए अगला कदम होता है।

vijkèk ds c<us ds dkj.k

वर्तमान परिपेक्ष्य में जिले, राज्य एवं पूरे देश में अपराधों की संख्या में निरन्तर वृद्वि होने के पीछे निम्नलिखित कारण दिए जा सकते हैः

1. vkfFkZd dkj.k% अपराधों की बढ़ती संख्या के पीछे सबसे मुख्य कारण आर्थिक कारण है। रोजी–रोटी की समस्या, निर्धनता ये ऐसे कारण है जिनके कारण मजबुरी वश इंसान अपराध कर बैठता है।
2. csjkstxkjh% देश की तेजी से बढ़ती जनसंख्या एवं रोजगार की कमी ऐसे कारण है जो निश्चित रूप से अपराध को जन्म देते है।

3. **ekufld fodkj%** वर्तमान समय से मनुष्य तनाव भरे वातावरण,अत्यधिक चिंताएं, मनोवैज्ञानिक बीमारी, मानसिक तनाव, डिप्रेशन के कारण भी कई अपराधिक कार्य कर बैठता है।
4. **e|iku@u'kk dh çofÙk%** वर्तमान में बच्चे से बड़ो तक में नशे की प्रवृत्ति एवं मद्यपान की आदत भी अपराधों में वृद्धि के प्रमुख कारण है।
5. **yphyh dkuu 0;oLFkk%** भारतीय न्याय प्रणाली में निरन्तर बढ़ते हुए केसो की संख्या एवं निर्णय में अत्यधिक विलंब होना, ये ऐसे कारण है जिनकी फायदा अपराधी उठाने की प्रयास करता है एवं झूठे साक्ष्य प्रस्तुत कर खुद को बचाने की कोशिश करता है।
6. **lk'ky ehfM;k%** वर्तमान में वाट्सअप, फेसबुक टिवटर, इस्टाग्राम इत्यदि विभिन्न शोसल मीडिया ने भी आनलाईन माध्यम से अपराधो को निरन्तर बढ़ाने हेतु काफी हद तक दोषी माने जा सकते है।
7. **ncko r=%** दोस्तो, परिवार इत्यादि का निरन्तर दबाव तंत्र भी अपराधों के बढ़ने के पीछे एक कारण है। गलत संगत,गलत लोगो के साथ रहकर भी व्यक्ति अपराधिक प्रवृत्तियों में लिप्त हो जाता है।
8. **o;fäd dkj.k%** इसे हम अपराधो का शारीरिक कारण भी कह सकते है, शारीरिक लक्षण जैसे आयु, लिंग, शरीर रचना, भौतिक वातावरण आदि का अपराधो पर गहरा प्रभाव पड़ता है। 15 से 16 वर्ष की आयु में साधारण तथा 25 से 26 की आयु में गंभीर प्रकृति के अपराध देखने को मिलते है। यद्यपि अपराध कार्य करने में पुरूषो की तुलना में महिलाओं का प्रतिशत कम है।
9. **ifjokfjd dkj.k%** परिवारिक कारण जैसे परिवार में उपेक्षा सौतेला व्यवहार कठोर अनुशासन ,असुरक्षा परिजनों का असामान्य व्यवहार, परिवारिक कलह भी अपराध के पीछे प्रमुख कारण है।
10. **lkekftd dkj.k%** सामाजिक मान्यताओं, रीति रिवाज एवं प्रथाओं का भी व्यक्ति पर गहरा प्रभाव पड़ता है।
11. **jktuhfrd dkj.k%** राजनीति का अपराधिकरण शासन एवं प्रशासन मे पारदर्शिता का लुप्त होना भ्रष्टाचार, अनैतिक आचरण, राजनेताओं एवं नौकरशाही में विभिन्न प्रकार की विकृतिया पनपने, अपराधी प्रवृत्ति के लोगो का संरक्षण इत्यादि कारण भी अपराध हेतु सहायक है।
12. **vU; dkj.k%** अपराध अन्य कारणों में भौगोलिक विचारियिक कारणों को शामिल किया जा सकता है। साथ ही चारित्रिक कारण जैसे क्रोध, मद, मोंह, ईष्या, लोभ, निन्दा, प्रमाण आदि कारण भी अपराधों की संख्या बढ़ाते है।

vijkèkk dk jkdu grq çe[k mik;

1. **i.k u'kk fu"kèk%** वास्तव में अपराध की संख्या में कमी लाना है तो पूर्णतया नशा निषेध एवं मद्यपान निषेध अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होगा क्योकि अधिकांश अपराध नशे की प्रवृत्ति से मद्यपान की स्थिती मे घटित होते है।
2. **jktxkj dk lefpr volj%** बेरोजगारी अपराध के पीछे मुख्य कारण है अतः सरकार अधिक से अधिक लोगो को रोजगार देकर काफी हद तक अपराध मे कमी ला सकती है।
3. **vijkfèkd dkuuk dk çpkj çlkj%** आज भी लोग विभिन्न अपराधों एवं अपराधिक कानूनों से अनाभिज्ञ है। अतः समय–समय पर ग्रामीण इलाकों एवं चौक–चौराहों में विभिन्न अपराधिक कानूनों की जानकारी एवं उनके दंड की जानकारी जनता को दी जानी चाहिए ताकि लोगो में जागरूकता आए एवं वे अपराध करने से बचे।
4. **vijkèkh dh euksoKkfud çofÙk dk vè;;u%** समाज को अपराध मुक्त रखने हेतु अपराध एवं अपराधी को मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों को समझाना जरूरी हैं। उनका अध्ययन कर व्यक्ति को अपराधी बनाने से रोका जा सकता है।
5. **f'k{kk dk çpkj çlkj%** अपराध के पीछे बहुत बड़ा कारण अशिक्षा है। अतः शिक्षा की स्तर ऊंचा उठाकर एवं जनसामान्य विशेष तोर पर ग्रामीण एवं पहाड़ी इलाकों में शिक्षा का स्तर उठाकर निश्चित रूप से अपराधों में कमी लाई जा सकती है।

6. dMk dkuu ,o nM dk Hk;% अपराधिक कानुन सख्त हो एवं अपराध करने वालो को दंड की भयावकता से परिचित कराकर अपराधों में कमी लाई जा सकती हैं
7. Hk"Vkpkj mYewyu% भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु विभिन्न उपाय करके भी काफी हर तक अपराधों से कमी लाई जा सकती है।
8. vkfFkd dkj.kk dk dk funku% निर्धनता को दूर कर, आर्थिक कारणों का निदान कर भी काफी हद तक अपराधों मे कमी लाई जा सकती है ।
9. lekkjd lLFkk,% वर्तमान मे अपराधियों के सुधार पर विशेश ध्यान दिया जा रहा है। अतः सुधारक संस्थाएं जैसे परिवीक्षा, पैरोल, बाल न्यायालय, नजरबंदी गृह आदि की भूमिका भी महत्व पूर्ण है।
10. lkbcj vijkek jkdu gr fo'k"k ç;kl% वर्तमान परिपेक्ष्य मे साइबर ठगो को अपराध को अंजाम देने की नई–नई तकनीक को रोकने हेतु उनसे भी एक कदम आगे की सोच जरूरी है ताकि साइबर अपराधों का रोका जा सके।
11. dkuu 0;oLFkk e cnyko% देश की कानून व्यवस्था को सख्त बनाने से काफी हद तक अपराधिक घटनाओं को कम किया जा सकता है क्योकि जब कानून जितना सख्त होगा तो लोगो मे काफी हद तक भय रहेगा।
12. ifyl dh lfØ; Hkfedk% अपराध रोकने हेतु पुलिस प्रशासन की हर पल सक्रिय रहना नितांत आवाश्यक है। पुलिस की सदैव सक्रियता यदि अपराध को पुरी तरह खत्म भले ही न कर पाए, लेकिन अपराधों को कमी लाने मे सहायक सिद्व होगी।

fu"d"k

स्पष्ट है कि जिले, राज्य एवं पूरे देश में अपराधों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होना एक चिन्तनीय समस्या बन चुकी है। यदि विगत वर्षो का अध्ययन करे तो स्पष्ट है कि अपराधो की संख्या में कमी होने के बजाय निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। हत्या अपहरण,चोरी आनलाईन फ्राड, दहेज, बलात्कार, धोखाधड़ी, मारपीट बलवा, इत्यादि विभिन्न अपराध कम होने के बजाय निरन्तर बढ़ते जा रहे है। साइबर क्राइम अपराध भी निरन्तर बढ़ते जा रहे है। अपराध के कारणो पर आज भी अनुसंधान जारी है। बहुत से लोग अपराध के लिए व्यक्ति एवं परिस्थिति को जिम्मेदार मानते है, जबकि कुछ लोग अपराध हेतु व्यक्ति एवं समाज दोनो को जिम्मेदार मानते है। साइबर क्राइम को रोकना सबसे कठिन समस्या बन चुकी है। पुलिस तंत्र अपना कार्य कर रहे है, समाजसेवी संगठन भी अपना योगदान दे रहे है। कानून भी अपनी जगह है, दंड भी है। इसके बावजूद अपराध कम होने के बजाय निरन्तर बढ़ते जा रहे है। अतः अपराधों मे कमी लाने हेतु सरकार एवं पुलिस की भूमिका तभी महत्वपूर्ण हो सकती है जबकि आम जनता इस दिशा मे जागरूक हो एवं अन्य लोगो को भी जागरूक करे। वास्तव में अपराध मे कमी लाने हेतु हर व्यक्ति को अपराध के परिणाम से परिचित होना बहुत जरूरी है ताकि लोग जान सके कि अपराध करने के बाद उनके परिवार की स्थिती पर कितना प्रभाव पड़ सकता है। जब लोग स्वयं जागरूक होगें तभी इस समस्या में कमी संभव है। किसी भी समाज के निरंतर विकास हेतु समाज में शांति एवं सुरक्षा का वातावरण होना अत्यंत आवश्यक है। अतः समाज में शांति का वातावरण बनाये रखने हेतु उसे अपराध मुक्त कराना न केवल पुलिस एवं शासन प्रशासन की जिम्मेदारी है, वरन् आम जनता को भी इस दिशा में स्वयं भी जागरूक होना होगा साथ ही अपने मोहल्ले, गांव, परिवार, एवं शहर के लोगों को भी किसी भी तरह के अपराध से दुर रहने हेतु जागरूक करना होगा, तभी अपराधों की बढ़ती हुई संख्या में कमी लाई जा सकती है।

lnHk lph

1. आई.आर 2001 एस.सी. 1820।
2. ए.आई आर. 1965 एस.सी. 722।

3. 1629 सी.सी. 529।
4. (1837) 8 सी. एण्ड.पी. 136।
5. बावेल बसन्तीलाल, (2005) *भारतीय दण्ड सहिता,* उन्नीसवां संस्करण 2005।
6. महाजन संजीव, (2017) *अपराध शास्त्र एवं दण्डशास्त्र,* प्रथम संस्करण 2017, ISBN 81-88775-85-1।
7. परांजपे ना. वि., (2017) अपराध शास्त्र ,दण्ड प्रशासन एवं प्रपीडन शास्त्र अष्ठम संस्करण पुनः मुद्रित (2017) ISBN : 978-93-84961-08-4।
8. दैनिक भास्कर (2022, दिसंबर 31) धमतरी पृ. 15।

——==00==——